अध्याय 5

पापबलि (जारी है) और दोषबलि

लैव्यव्यवस्था 5:1-13 "पापबलि" की चर्चा को क्रमागत जारी रखता है जिसकी चर्चा 4:1 में प्रारंभ हुई थी। अध्याय पाँच का यह भाग पाप बलि के लिए परमेश्वर द्वारा दिए गए आवश्यक निर्देश बताता है। परमेश्वर की विधि ने दरिद्रों को अपने पापों के प्रायश्चित्त के बदले कम दाम वाले पाप बलि बलिदान करने का अधिकार प्रदान किया था। इस अध्याय का शेष भाग, 5:14-19, "दोषबलि" पर चर्चा प्रारंभ करता है जिसका सारांश 6:1-7 में पाया जाता है।

वे पाप जिनके बदले पापबलि बलिदान किया जाना चाहिए (5:1-6)

1"और यदि कोई साक्षी हो कर ऐसा पाप करे कि शपथ खिलाकर पूछने पर भी, कि क्या तू ने यह सुना अथवा जानता है, और वह बात प्रगट न करे, तो उसको अपने अधर्म का भार उठाना पड़ेगा। 2और यदि कोई किसी अशुद्ध वस्तु को अज्ञानता से छू ले, तो चाहे वह अशुद्ध बनैले पशु की, चाहे अशुद्ध रेंगने वाले जीव-जन्तु की लोथ हो, तो वह अशुद्ध हो कर दोषी ठहरेगा। 3और यदि कोई मनुष्य किसी अशुद्ध वस्तु को अज्ञानता से छू ले, चाहे वह अशुद्ध वस्तु किसी भी प्रकार की क्यों न हो जिस से लोग अशुद्ध हो जाते हैं तो जब वह उस बात को जान लेगा तब वह दोषी ठहरेगा। 4और यदि कोई बुरा वा भला करने को बिना सोचे समझे शपथ खाए, चाहे किसी प्रकार की बात वह बिना सोचे विचारे शपथ खाकर कहे, तो ऐसी बात में वह दोषी उस समय ठहरेगा जब उसे मालूम हो जाएगा। 5और जब वह इन बातों में से किसी भी बात में दोषी हो, तब जिस विषय में उसने पाप किया हो वह उसको मान ले, 6और वह यहोवा के साम्हने अपना दोषबलि ले आए, अर्थात उस पाप के कारण वह एक भेड़ वा बकरी पापबलि करने के लिये ले आए; तब याजक उस पाप के विषय उसके लिये प्रायश्चित्त करे।"

आयतें 1-4. पापबलि के लिए तीन अवस्थाओं का वर्णन किया गया है। सबसे

पहले, यदि कोई व्यक्ति **सार्वजनिक अभिशपथ** के बाद भी और मामले की सच्चाई जानते हुए भी **साक्षी न** बने (5:1)। "सार्वजनिक अभिशपथ" शाब्दिक रूप में "शपथ खाना" है। "अभिशपथ" सत्य कहने के लिए इस आशय के साथ शपथ दी जाती है कि यदि कोई सत्य नहीं बोलता है तो उस पर श्राप आ पड़ेगा। आयत यह कहता है कि जिस मामले की छानबीन चल रही है और उसकी सच्चाई के बारे में उसको पता चल जाता है, तो वह स्वतः ही अपने आपको साक्षी बनाए। यदि वह ऐसा नहीं करता है या यदि वह भूल जाता है या असावधानी बर्तता है, तो **उसको अपने अधर्म का बोझ उठाना पड़ेगा**।

दूसरी बात, यदि एक व्यक्ति किसी **अशुद्ध** वस्तु को छूता है तो वह **अशुद्ध** ठहरेगा (5:2, 3)। संभवतः इस परिस्थिति में गलत कार्य समझने का सबसे बढ़िया माध्यम यह है कि पापी इसे जाने बिना अशुद्ध हो जाता है और इस तरह वह उचित धार्मिक परम्परा निभाने से चूक जाता है। दूसरी संभावना यह है कि वह स्वयं **अशुद्ध**ता के बारे में जानता है लेकिन इससे संबंधित धार्मिक परम्परा निभाना भूल जाता है। यदि यही मामला है तब यह अंश यह सुझाव प्रस्तुत करता है कि अशुद्ध वस्तु छूने में कोई पाप नहीं है, यद्यपि यह कार्य पारंपरिक रूप से किसी को भी अशुद्ध कर सकता था। "पाप" प्रत्यक्ष रूप से तब प्रकट हुआ, जब कोई धार्मिक अशुद्धता को हटाने के लिए आवश्यक कदम नहीं उठाता है।

तीसरी बात, यदि **कोई भला या बुरा करने के लिए बिना सोचे समझे शपथ खाए** लेकिन वह अपने इस शपथ को पूरा नहीं करता है (5:4)। "बुरा या भला करने के लिए" शपथ खाना यह दर्शाता है कि कोई भी शपथ खाने के लिए संदर्भित हो सकता है। इसका तात्पर्य कुछ इस तरह है "कुछ भी करने के लिए शपथ खाना।" यदि किसी ने जल्दबाज़ी में शपथ खाई हो और इसके बाद वह भूल जाता है कि उसने शपथ खाई है और वह शपथ पूरा नहीं करता है तो वह इस पाप का **दोषी ठहरेगा**। कुछ टीकाकार शपथ को पियक्कड़पन की अवस्था में बिना विचारे दिए गए शपथ से संबंधित करते हैं। निश्चय, जो नशे में होता है वह कुछ ऐसे वक्तव्य, शपथ के साथ, बोलता है जो वह सचेत अवस्था में नहीं बोलता है।

इन अपराधों में कई बातें सामान्य हैं। वे सभी "अनजाने में किया गया" गलत कार्य पाप के अंतर्गत् आते हैं। दूसरे मामले में, यह कि पापी ने कुछ ऐसे अशुद्ध वस्तु छुआ जो **उससे छिपा हुआ था** (5:2, 3)। उसी तरह, बिना सोचे समझे शपथ खाना यह बतलाता है कि यह अनजाने में खाई गई शपथ है; और पाठ यह बताता है कि शपथ से संबंधित उसका पाप **उससे छिपा हुआ था** (5:4)। साक्षी न बनना, जानबूझकर किया गया अपराध जान पड़ता है; लेकिन चूँकि साक्षी बनने की असफलता इस संदर्भ में सम्मिलित किया गया है, तो इसमें किया गया पाप अस्थाई कमज़ोरी जान पड़ता है, जो इसे भी अनजाने में किए गए पाप की श्रेणी में रखता है।

आयत 5. इससे बढ़कर, यह परिस्थिति इस बात की मांग करती है कि पापी अपना अनुचित कार्य **अंगीकार** करे। व्यवस्था के अधीन जिस व्यक्ति को पाप क्षमा की आवश्यकता है उसको "*यदि* मैंने पाप किया हो तो मुझे क्षमादान दिया जाए"

कहने की अनुमति नहीं है। उसको सार्वजनिक रूप से यह स्वीकार करना होगा कि उसने **पाप किया है**।

आयत 6. अंततः, उनको बलिदान, **पापबलि**, करने की आवश्यकता है, ताकि उनके पाप क्षमा किया जा सके। इस आयत के अनुसार जिस व्यक्ति को पाप क्षमा की आवश्यकता है, उसे जानवरों के झुण्ड में से बलिदान करने के लिए एक **मादा जानवर (भेड़ या बकरी)** लाना होगा। संभवतः, अन्य पापबलि के समान ही इसको भी किया जाना चाहिए था।

जब हम मूसा की व्यवस्था में इस प्रकार का विशिष्ठ व्यवस्था पढ़ते हैं, तब हमें स्मरण रखना होगा कि ऐसी व्यवस्था एक प्रतिमान या उदाहरण के रूप में लिखी गई थी, जिसका अनुप्रयोग इन परिस्थितियों से मिलती-जुलती परिस्थितियों में किया जा सकता है। इसलिए, हम इन उदाहरणों से इस निष्कर्ष पर पहुँच सकते हैं कि यह किसी भी व्यक्ति को दिए गए नागरिक या धार्मिक ज़िम्मेदारी निभाने में विफल होना पाप था, यह अशुद्धता से शुद्धिकरण की परंपरा को पूरा करने की विधि का अनदेखा करना या भूलना था, और शपथ खाकर उसको पूरा न करना पाप था। दूसरे शब्दों में, इस्राएलियों को यह व्यवस्था सार्वजनिक ज़िम्मेदारी, व्यक्तिगत् धार्मिक शुद्धिकरण बनाए रखने, और व्यक्तिगत् खराई की चौकसी करने की मांग करती थी। इन तीनों में से किसी भी क्षेत्र में असफल होना पाप था और उसके लिए पापबलि चढ़ाना आवश्यक था।

दरिद्रों के लिए पापबलिः पक्षी (5:7-10)

7"पर यदि उसे भेड़ या बकरी देने की सामर्थ्य न हो, तो अपने पाप के कारण दो पण्डुक या कबूतरी के दो बच्चे दोषबलि चढ़ाने के लिये यहोवा के पास ले आए, उनमें से एक तो पापबलि के लिये और दूसरा होमबलि के लिये। 8वह उनको याजक के पास ले आए, और याजक पापबलिवाले को पहले चढ़ाए, और उसका सिर गले से मरोड़ डाले, पर अलग न करे, 9और वह पापबलि पशु के लहू में से कुछ वेदी के बाजू पर छिड़के, और जो लहू शेष रहे वह वेदी के पाए पर गिराया जाए; वह पापबलि ठहरेगा। 10तब दूसरे पक्षी को वह विधि के अनुसार होमबलि करे, और याजक उसके पाप का प्रायश्चित्त करे, और तब वह क्षमा किया जाएगा।"

अगली कुछ आयतें प्रभु की मांग के अनुसार दरिद्रों के पापों के लिए पापबलि करने की सुविधा प्रदान करता है।

आयत 7. जबकि यह आयत **दोषबलि** के अंतर्गत संदर्भित है, लेकिन इसमें कोई संदेह नहीं है कि यह अनुच्छेद भी पापबलि के बारे में ही निर्देशित करता है। इस अनुच्छेद में, उन दरिद्रों के पापबलि के लिए उपाय किया गया है जो अपने पापों के प्रायश्चित्त के लिए भेड़ या बकरी जैसे महंगे बलिदान नहीं ला सकते थे। यह पाठ उन व्यक्ति विशेष के बारे में वर्णन करता है जो पापबलि के लिए **भेड़ नहीं दे सकते थे**[1] और यह यह भी बताता है कि वे पण्डुक **या कबूतरी के दो बच्चे** बलिदान

के लिए ला सकते थे। एक तो **पापबलि** का कार्य करेगा जबकि दूसरा **होमबलि** का कार्य करेगा।

आयतें 8-10. दूसरे बलिदानों के साथ, **याजक** तब बलिदान की विधि पूरा करता था। वह पक्षी का **गर्दन मरोड़कर** बिना काटे **पापबलि** करके बलिदान करता था (5:8)। उसको पापबलि का **कुछ लहू लेकर वेदी के बाजू पर छिड़कना था**, और बचे हुए लहू को उसे **वेदी के पाए पर गिराना था** (5:9)। चूंकि पक्षियों के लोथ के बारे में कुछ भी नहीं कहा गया था तो इससे यह अनुमान लगाया जा सकता है कि संभवतः याजक उसको खाते थे। **दूसरा पक्षी** को **व्यवस्था के अनुसार होमबलि** करके चढ़ाया जाना था (5:10) - अर्थात्, व्यवस्था में जो इसके बारे में पहले कहा गया है, उसके अनुसार करना था। चूँकि होमबलि पूरी तरह आग में भस्म हो जाती थी तो याजक इस दूसरे पक्षी से कुछ भी नहीं खा पाते थे।[2]

दरिद्रों से भी दरिद्र के लिए पापबलिः मैदा (5:11-13)

[11]"पर यदि वह दो पण्डुक या कबूतरी के दो बच्चे भी न दे सके, तो वह अपने पाप के कारण अपना चढ़ावा एपा का दसवाँ भाग मैदा पापबलि करके ले आए; उस पर न तो वह तेल डाले, और न लोबान रखे, क्योंकि वह पापबलि होगा। [12]वह उसको याजक के पास ले जाए, और याजक उसमें से अपनी मुट्ठी भर स्मरण दिलानेवाला भाग जानकर वेदी पर यहोवा के हवनों के ऊपर जलाए; वह पापबलि ठहरेगा। [13]और इन बातों में से किसी भी बात के विषय में जो कोई पाप करे, याजक उसका प्रायश्चित्त करे, और तब वह पाप क्षमा किया जाएगा। और इस पापबलि का शेष अन्नबलि के शेष के समान याजक का ठहरेगा।"

5:7-10 के विचारों के अनुसार ही अगले अंश का निर्देश जारी रहता है। यहाँ इस बात का अनुमान लगाया जा सकता है कि कुछ इस्राएली इतने दरिद्र थे कि वे अपने पापबलि की प्रायश्चित्त हेतु दो पक्षी भी नहीं दे सकते थे।

आयतें 11-13. दरिद्रों से भी दरिद्र[3] को भी अपने पापों से प्रायश्चित्त के लिए बलि दिए बिना छूट नहीं थी। बल्कि उनको **दो** पण्डुक **और कबूतर के दो बच्चे** से सस्ता वस्तु भेंट चढ़ाने की अनुमति थी। वे पशु या पक्षी के बजाए **मैदा** भेंट कर सकते थे। इस प्रकार का बलिदान **एपा का दसवाँ भाग** होता था। एक एपा एक बुशल के बराबर है, इसलिए एपा का दसवाँ भाग बुशल के दसवाँ भाग के बराबर ही होगा या फिर लगभग चार पिंट्स के बराबर होगा।[4] स्पष्टतया, यह भेंट भेड़ या पक्षियों के जोड़े से सस्ता रहा होगा।

यह भेंट याजक को ठीक वैसे ही देना होगा जैसे "अन्नबलि" दिया जाता था, केवल इसमें तेल या लोबान नहीं जोड़ा जाना चाहिए, और न ही इसे पकाया जाना चाहिए था (5:11)। फिर भी, अन्नबलि के समान, **स्मरण दिलाने वाला भाग** होमबलि की **वेदी पर** डाला जाता था और वेदी पर **यहोवा के हवनों के साथ जलाया** जाए, **वह पापबलि ठहरेगा** (5:12)। दूसरे शब्दों में, यह पापबलि के पशु

के साथ इसे जलाया जाना चाहिए था। तब पक्षियों के बलिदान से संबंधित जो अनकही बातें रह गई थी वह मैदा के भेंट में निर्दिष्ट किया गया हैः जो वेदी पर नहीं जलाया जाता था उसे **याजक** को खाना था (5:13)।

पापबलि के बारे में अध्याय 5 से अध्याय 6 तक चर्चा जारी है। (अध्यायों का विभाजन बाइबल लिखे जाने के कई सदियों पश्चात् किया गया है।) 5:1-13 में, पाठक को यह बताया गया है कि इस्राएलियों को विशेष प्रकार की पाप क्षमा के लिए क्या करना चाहिए था। 6:24-30 में याजकों को बचे हुए व्यक्तिगत् पापबलि की अवशेष के साथ क्या करना चाहिए था, के बारे में अतिरिक्त निर्देश दिया गया है।

पापबलि की महत्वत्ता

एक मायने में, इस्राएल के धर्म में "पापबलि" नई तरीके से उभर कर आई थी। यद्यपि उत्पत्ति की पुस्तक में "होमबलि" के बारे में वर्णन किया गया है, निर्गमन की पुस्तक से पहले, सिनै पर्वत पर मूसा को व्यवस्था दिए जाने तक "पापबलि" के बारे में नहीं कहा गया है (देखें निर्गमन 29:14, 36; 30:10)।

मूसा की व्यवस्था दिए जाने से पहले, पाप से प्रायश्चित्त करने के लिए होमबलि का प्रयोग किया जाता था। उदाहरण के लिए, अय्यूब ने अपने बच्चों के लिए "होमबलि" यह कहकर चढ़ाई कि "कदाचित् मेरे लड़कों ने पाप करके परमेश्वर को छोड़ दिया हो" (अय्यूब 1:5)।[5]

यदि होमबलि पहले ही पापबलि के लिए प्रयोग किया गया था तो परमेश्वर ने क्यों दूसरे प्रकार के बलिदान - पापबलि - को उसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए शुरू किया? इसके कई संभावित उत्तर हो सकते हैं।

स्पष्ट रूप से पहले से आराधना में संलग्न इस्राएलियों के लिए निवास स्थान में आराधना का आरंभ इसकी औपचारिकता को पूरा करना था। परमेश्वर ने अपने लोगों के साथ एक वाचा बांधी थी। उसके निर्देशानुसार, उसकी आराधना करने के लिए उन्होंने मिलापवाले तम्बू का निर्माण उसकी आराधना के केंद्र के रूप में किया था। अब उस मिलापवाले तम्बू का प्रयोग करते हुए, उसका अनुकरण करने के लिए उनको निर्धारित नियमावली की आवश्यकता थी। जिन बातों की आवश्यता समझी जा रही थी उन्हें अब शब्दों में उच्चारित करने की आवश्यकता थी; जो गुप्त था उनको अब स्पष्ट करना था। होमबलि का प्रयोग मूल रूप से धन्यवाद या समर्पण प्रकट करने के लिए और क्षमादान प्राप्त करने के लिए जो भेंट चढ़ाया जाता था उनके बीच विभेद करना अवश्य था। इसलिए, परमेश्वर ने पापबलि और दोषबलि का विधान प्रारंभ किया।

इससे बढ़कर, चूँकि पुरानी व्यवस्था, नई वाचा के लिए "छायांकन" (कुलु. 2:17; इब्रा. 8:5; 10:1) है, परमेश्वर ने भावी पीढ़ी के सम्मुख पापबलि का उद्घघाटन यह कहकर किया कि "पापबलि" के रूप में मसीह की मृत्यु का क्या अर्थ है। हम जो समय के चक्र से बंधे हुए हैं उनके लिए इसका अनुमान लगाना कठिन

है; परंतु हो सकता है कि परमेश्वर ने उद्धार प्राप्त करने के लिए मसीह की भूमिका समझाने के लिए पापबलि का शुभारंभ किया होगा।

पापबलि की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता इसकी पाप क्षमा का संदेश है। इस समय तक बाइबल की कहानी में मनुष्य का पापी होना और परमेश्वर का मनुष्य की इस पाप का समाधान करने पर ज़ोर दिया गया है। अंततः, यहाँ, एक मनुष्य को जो उद्धार के लिए भूखा और प्यासा है, को शांतिदायक संदेश मिलता है कि "वह क्षमा किया जाएगा" (4:20, 26, 31, 35)।

पापबलि के संबंध में, वचन यह कहता है कि पाप क्षमा प्राप्त लोगों को आत्मिक जीवन जीने की सामर्थ दयालु परमेश्वर से मिलती है! बाइबल का शेष भाग इसी शीर्षक का विस्तार करता है।

दोषबलि से संबंधित भेंट के बारे में व्यवस्था का स्रोत (5:14)

14फिर यहोवा ने मूसा से कहा ... ।

भेंट चढ़ाने के बारे में अध्याय पाँच के अंतिम दो अनुच्छेद इन भेंटों को चढ़ाने के संबंध में महत्वपूर्ण नियम के स्रोत के बारे में संस्मरण कराता है।

आयत 14. यह कि **तब यहोवा ने मूसा से कहा, वचन** यह सुझाव प्रस्तुत करता है कि यह भाग एक नये विषय का परिचय कराता है। यह नया विषय दोषबलि है जिसके बारे में 5:14-6:7 में विषलेषण किया गया है।

"दोषबलि" इब्रानी शब्द אָשָׁם *(एशाम)* का अनुवाद है। जबकि बहुत से अंग्रेजी अनुवाद इसके लिए "दोषबलि" ही प्रयोग करते हैं (NASB; NRSV; NIV; NAB; NJPSV; ESV), दूसरे अनुवाद इसके लिए "पापबलि" (KJV; NKJV) या "भरपाई बलि" (REB) प्रयोग करते हैं। NJB में इसका अनुवाद ("भरपाई की बलि"), किया गया है जबकि CEV में "सब कुछ ठीक करने का बलिदान" किया गया है। इस शब्द का अर्थ "दोष," "प्रत्यर्पण," या "छुटकारे, क्षतिपूर्ति का भेंट" हो सकता है।[6]

पाठ यह दर्शाता है कि दोषबलि दो प्रकार के पापों के लिए निर्धारित किया गया था। (1) परमेश्वर के "पवित्र वस्तु" या यहोवा की आज्ञा तोड़ने के विरुद्ध पाप क्षमा के लिए यह भेंट आवश्यक था (5:15-19), और (2) दूसरे की सम्पत्ति छीनने की पाप की क्षमा के लिए भी आवश्यक था (6:1-7)। इसलिए, ऐसा जान पड़ता है कि "उल्लंघन" या "दोषबलि" की विशेषता क्षतिपूर्ति, या प्रायश्चित्त के लिए प्रयोग किया जा सकता था या फिर जो क्षतिपूर्ति की मांग करे। एक शब्दकोश के अनुसार, "ऐसा जान पड़ता है कि यह भेंट परमेश्वर या मनुष्य के विरुद्ध किए गए अपराध तक सीमित था ताकि उसका आंकलन कर क्षतिपूर्ति किया जा सके।"[7]

परमेश्वर की "पवित्र किए हुए वस्तुओं" के विरुद्ध विश्वासघात करने की पाप के प्रति भेंट (5:15, 16)

15"यदि कोई यहोवा की पवित्र की हुई वस्तुओं के विषय में भूल से विश्वासघात करे और पापी ठहरे, तो वह यहोवा के पास एक निर्दोष मेढ़ा दोषबलि के लिये ले आए; उसका दाम पवित्रस्थान के शेकेल के अनुसार उतने ही शेकेल चाँदी का हो जितना याजक ठहराए। 16और जिस पवित्र वस्तु के विषय उसने पाप किया हो, उसमें वह पाँचवाँ भाग और बढ़ाकर याजक को दे; और याजक दोषबलि का मेढ़ा चढ़ाकर उसके लिये प्रायश्चित्त करे, तब उसका पाप क्षमा किया जाएगा।"

इस अंश में परमेश्वर के संदेश में दोषबलि से संबंधित दो श्रेणियों के पापों में से प्रथम पाप जिसके बारे में यहाँ विश्लेषण किया गया है, वह परमेश्वर के "पवित्र वस्तुओं" के विरुद्ध पाप है।

आयत 15. परमेश्वर की **पवित्र वस्तुओं** के विरुद्ध पाप के प्रति प्रायश्चित्त के लिए **दोषबलि** के रूप में एक **निर्दोष मेढ़ा** की आवश्यकता थी। गॉर्डन जे. वेनहैम के अनुसार, "पवित्र वस्तु" का अनुवाद "पवित्र सम्पत्ति" भी किया जा सकता है और इसकी समानता "ऐसे किसी भी वस्तु से की जा सकती है जो मनुष्य द्वारा परमेश्वर को समर्पित है"[8] (देखें अध्याय 27), जिसमें याजक को दी गई भेंटें भी सम्मिलित है।

निर्दोष मेढ़ा का दाम, याजक द्वारा ठहराए गए दाम के बराबर होना चाहिए। NASB के अनुसार मेढ़ा का **दाम पवित्रस्थान के शेकेल के अनुसार उतने ही शेकेल चाँदी का हो जितना याजक ठहराए।** NIV के अनुवाद के अनुसार, इसका यह अनुमान था कि "चाँदी का उचित दाम होना चाहिए।" "पवित्रस्थान का शेकेल" भार का एक माप था (संभवतः जो निवासस्थान के परिक्षेत्र में रखा गया हो) जिसकी संभावना यह जताई जाती है कि यह उस समय के प्रचलित शेकेल से भिन्न रहा होगा।

इस विषय का विस्तार इसलिए किया गया है ताकि उन लोगों को जो मेढ़ा के बदले उसके बराबर दाम चुकाने चाहते हैं उनके लिए आसानी हो।[9] जेकब मिलग्रोम ने इस बलिदान के बारे में कहा "बलिदान का दण्ड जिसका विनिमय *चाँदी* से किया जा सके।"[10] CEV के अनुसारः "या तो तुम एक निर्दोष मेढ़े का बलिदान करो या फिर मेढ़े के बराबर याजकों द्वारा प्रयोग किए जाने वाले आधिकारिक दाम चुकाओ।" यह कि मेढ़े (बकरी या भेड़ से अधिक महंगा बलिदान) की आवश्यकता इस ओर संकेत करता है कि ऐसे पाप - परमेश्वर के पवित्र वस्तुओं के प्रति पाप - सामान्य पापों से अधिक गम्भीर विषय था, जिसके लिए पापबलि देने की आवश्यकता थी।

यह अंश किस प्रकार के पाप की अपेक्षा करता है? पाप की प्रवृत्ति को तीन तथ्यों के द्वारा सुझाया जा सकता है। (1) जो भी व्यक्ति यह पाप करता है वह

अविश्वासयोग्ता के साथ व्यवहार करता है। (2) उसने **जानबूझकर** पाप नहीं किया है - नादाब और अबीहू के पाप के समान नहीं, जिन्होंने आज्ञा न मानकर यहोवा को "विचित्र अग्नि" की भेंट चढ़ाई (10:1, 2)। (3) किसी तरह, इस पाप में गलत कार्य संलग्न है, जिसके लिए क्षतिपूर्ति की आवश्यकता थी। आमतौर पर टीकाकार इस पाप को जो परमेश्वर से संबंधित है, का दुरूपयोग करने से संबंधित करते हैं, जिसमें जो परमेश्वर को अर्पण करना चाहिए था, उसे न देकर अपने पास रख लेना भी सम्मिलित है - जैसे दशवांश या प्रथम फल।

यह लेखांश से किस प्रकार के पाप का पहले ही से अनुमान होता है? "अविश्वासयोग्यता" शब्द यह संकेत करता है कि पापी परमेश्वर की व्यवस्था के प्रति विश्वासयोग्य नहीं था; किसी तरह, उसने "पवित्र वस्तुओं" से संबंधित परमेश्वर की व्यवस्था को तोड़ा। फिर भी उसने ऐसा जानबूझकर नहीं किया; या तो उसने गलती से ऐसा किया, या वह भूल गया था या फिर आंशिक क्षण के लिए जो भी परमेश्वर उससे चाहता था, उपेक्षा की होगी।

एक इस्राएली परमेश्वर के पवित्र वस्तु के प्रति कई प्रकार से पाप कर सकता था। याजकीय लाभ के लिए वह अपने खेत का प्रथम फल भेंट में लाने में भूल कर सकता था। वह याजकों के लिए ठहराया गया भोजन, असावधानी से खा सकता था (देखें 22:14)। वह यहोवा को कुछ - जैसे घर या सम्पत्ति का एक भाग - अर्पण करने के लिए शपथ खा सकता था और फिर वह ऐसा करने में लापरवाही कर सकता था।

आयत 16. तब उसे क्या करना चाहिए था? सबसे पहले, उसे अनदेखा करने के लिए **क्षतिपूर्ति या प्रायश्चित्त** करना चाहिए था। ऐसा करने के लिए, वह यहोवा के प्रतिनिधि, याजकों को, जो वस्तु उसने यहोवा से छिपा कर रखे, उसके समान उसका मूल्य - प्रथम फल का मूल्य, या याजक का भोजन जो उसने भूलवश खाया हो, या फिर उस वस्तु का मूल्य जो उसने यहोवा को भेंट चढ़ाने की शपथ खाई थी - के साथ ही **पाचवाँ भाग**, या 20 प्रतिशत भी भरे।

तब पापी को **दोषबलि** के रूप में, एक **मेढ़ा** बलिदान करने की आवश्यकता थी। **याजक** इसको बलि करके दोषी व्यक्ति के लिए **प्रायश्चित्त** करता था। इस अनुच्छेद में यह बलिदान या भेंट किस रीति से किया जाना चाहिए था, उसके संबंध में कोई विस्तृत जानकारी नहीं दी गई है। दोषबलि भेंट करने के तरीका का विश्लेषण 7:1-7 में पाया जाता है। प्राथमिक रूप से जो दूसरे पापबलियों में जिन विधियों का पालन किया जाता था, वैसे ही इस बलिदान के लिए भी उन्हीं विधियों का पालन किया जाना चाहिए था, मेढ़े की चरबी को वेदी पर जलाया जाना चाहिए था और दोषबलि के अवशेष को याजकों द्वारा खाया जाना चाहिए था।

दूसरे पापों के लिए दोषबलि जिनके लिए क्षतिपूर्ति की आवश्यकता थी (5:17-19)

17"यदि कोई ऐसा पाप करे कि उन कामों में से जिन्हें यहोवा ने मना किया है किसी काम को करे, तो चाहे वह उसके अनजाने में हुआ हो तौभी वह दोषी ठहरेगा, और उसको अपने अधर्म का भार उठाना पड़ेगा। 18इसलिये वह एक निर्दोष मेढ़ा दोषबलि करके याजक के पास ले आए, वह उतने ही दाम का हो जितना याजक ठहराए, और याजक उसके लिये उसकी उस भूल का जो उसने अनजाने में की हो प्रायश्चित्त करे, और वह क्षमा किया जाएगा। 19यह दोषबलि ठहरे; क्योंकि वह मनुष्य नि:सन्देह यहोवा के सम्मुख दोषी ठहरेगा।"

यहोवा एक अन्य पाप के बारे में विश्लेषण करता है जिसके लिए दोषबलि की आवश्यकता थी।

आयतें 17-19. इन आयतों में उस पाप के बारे में कहा गया है जिसे **यहोवा** ने व्यवस्था में करने से मना किया है। इससे भी बढ़कर, पाठ यह बताता है कि जिस व्यक्ति ने पाप किया है, वह अपने पाप से **अनभिज्ञ** था (5:17); उसने वह **अनजाने** में किया और वह इसके बारे में **नहीं जानता था** (5:18)। यद्यपि उसने उस समय अनजाने में गलत कार्य किया, पाठ यह स्पष्ट करता है कि वह अब भी **दोषी** है और दण्ड के योग्य है (5:19)।

पाप क्षमा प्राप्त करने के लिए, उसको दोषबलि के रूप में एक **निर्दोष मेढ़ा** बलि करना था (5:18)। जब याजक बलिदान के द्वारा प्रायश्चित्त कर लेता था तो पापी को क्षमा प्राप्त होती थी। 7:1-7 में दिए गए निर्देश के अनुसार मेढ़ा का बलिदान किया जाना चाहिए था।

क्षतिपूर्ति के बारे में कुछ नहीं कहा गया है। तब, कैसे, इस पाप के लिए यह बलिदान **दोषबलि** हो सकता है (5:18, 19)? यह मानते हुए इस प्रश्न का उत्तर दिया गया है कि इस विषय का विश्लेषण पूर्वर्ती विषय जो अनुच्छेद 5:17-19 में वर्णित है - और जो परमेश्वर और उसके "पवित्र वस्तु" के विरुद्ध पाप का विश्लेषण है, को ही जारी रखता है।

इस पाप और 5:15, 16 में वर्णित पाप के बीच क्या अंतर है? इस स्थिति में, यद्यपि पापी को यह पता नहीं है कि उसने क्या पाप किया है, फिर भी वह यह मानता है कि उसने यहोवा के विरुद्ध पाप किया है। जब उसने पाप किया तो वह इस पाप से "अनभिज्ञ" था, जो उसने "अनजाने" में पाप किया था। उसे कभी यह मालूम ही नहीं था कि क्या उसने कोई विशेष पाप किया था या नहीं। संभवतः उसके विवेक ने उसको दोषी ठहराया होगा, जो किसी प्रकार की मानसिक या आत्मिक असहजता, या फिर कोई ऐसी नकारात्मक परिस्थिति की भावना जो परमेश्वर के "पवित्र वस्तु" के विरुद्ध ने उसको यह मानने के लिए विवश किया होगा कि वह दोषी है। इस अनजाने में किए गए पाप या दोष भावना का समाधान करने के लिए, वह दोषबलि कर सकता था। चूँकि उसको अपने विशेष पाप के बारे

में पता नहीं है, तो उसको क्षतिपूर्ति करने की आवश्यकता नहीं है।[11]

दोषबलि का अभिप्राय

जबकि दोषबलि, पापबलि की महत्वत्ता पर ज़ोर देता है तो यह इसमें एक संदेश भी है: एक पापी को प्रायश्चित्त के लिए, जहाँ तक संभव हो, जिसके विरुद्ध उसने पाप किया है, चाहे वह परमेश्वर हो या मनुष्य, उसको क्षतिपूर्ति करना चाहिए था।

परिणामस्वरूप, मूसा की व्यवस्था के अनुसार पाप से छुटकारा केवल बलिदान चढ़ाना ही नहीं था। इसके लिए पापांगीकार (5:5) एवं क्षतिपूर्ती की भी आवश्यकता थी (5:16)। पाप क्षमा केवल उचित रीति रिवाज़ की ही मांग नहीं करता है बल्कि इसके लिए उचित आत्मिक दृष्टिकोण एवं कार्य की भी आवश्यकता है। दोषबलि की इस लक्षण पर जेकब मिलग्रोम ने इस प्रकार टिप्पणी की:

> प्रथम दृष्टया [दोषबलि ऐसा प्रतीत होता है] परमेश्वर की सम्पत्ति, चाहे उसकी वेदी हो या फिर उसका नाम, को हानि पहुँचाना जान पड़ता है। फिर भी, यह एक विस्तृत धर्मवैज्ञानिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। संज्ञा रूप *'ăšām* ["क्षतिपूर्ती, क्षतिपूर्ती बलिदान"] का संबंध क्रिया रूप *'āšam* ["दोषी अनुभव करना"] से है, जो इस बलिदान (5:17, 23, 26 [MT]) और शुद्धिकरण की बलिदान [पापबलि] पर अधिक प्रभाव डालती है (4:13, 22, 27; 5:4, 5)। इसका नैतिक परिणाम है। बलिदान द्वारा प्रायश्चित्त दो तथ्यों पर निर्भर करता है: आराधक की आत्म ग्लानि (क्रिया रूप *āšam*) और क्षतिपूर्ती (संज्ञा रूप *'ăšām*) को वह अपनी दोष सुधारने के लिए मनुष्य और परमेश्वर दोनों के सम्मुख प्रस्तुत करता है।[12]

"आत्म ग्लानि" की आवश्यकता का यह अर्थ है कि पुराने वाचा के अंतर्गत पाप क्षमा केवल रीति रिवाज़ का परिणाम नहीं था; यह यांत्रिकी या स्वतः भी नहीं था। बल्कि, यह मनुष्य के हृदय विदारक पुकार के प्रति परमेश्वर का उनके छुटकारे के लिए अनुग्रहपूर्ण प्रत्युत्तर था, जो पापबलि या दोषबलि देकर निवेदन किया जाता था, जिसमें आत्म ग्लानि, पापांगीकार और क्षतिपूर्ती भी शामिल था।

पापबलि और दोषबलि के बीच अंतर

सामान्य पाठक और चौकस विद्यार्थी दोनों के मन में लैव्यव्यवस्था के इस भाग का अध्ययन करते समय जो प्रश्न सबसे पहले उठता है वह यह है कि "पापबलि और दोषबलि के बीच क्या अंतर है?" इसमें कोई आश्यचर्य नहीं है कि विभिन्न विद्वानों ने इस प्रश्न का अलग-अलग उत्तर दिया है। आर. के. हैरीसन ने कहा कि पापबलि और दोषबलि के बीच संबंध "अस्पष्ट है, लेकिन ऐसा प्रतीत होता है कि [पापबलि] परमेश्वर के विरुद्ध अधिक पाप करने का परिणाम है और [दोषबलि] सामान्य सामाजिक आज्ञा का उल्लंघन है।"[13] जॉन एच. वाल्टन ने इन दोनों के

बीच अंतर का विश्लेषण यह कहकर किया है कि पापबलि "प्राथमिक रूप से उस स्थिति में लागू होता है जहाँ शुद्धिकरण की आवश्यकता होती है," जबकि दोषबलि "उस स्थिति में लागू होता है जहाँ किसी पवित्र वस्तु के अपवित्रीकरण करने की बात आती है या जहाँ परोक्ष दोष की बात हो।"[14] बिल टी. आर्नाल्ड और ब्रायन टी. बेयर ने कहा कि पापबलि "परमेश्वर के विरुद्ध पाप से पश्चाताप करने के लिए था," जबकि दोषबलि "पश्चाताप तो था लेकिन पुनः स्थापना व क्षतिपूर्ती के लिए भी था" और यह "आमतौर पर पवित्र वस्तुओं एवं सामाजिक परंपरा तोड़ने के लिए था।"[15]

यदि कोई अपने लिए इन दोनों के बीच विभेद करने का प्रयास करता है तो पहली बात जिसके बारे में उसे पता चलता है वह यह है कि ये दोनों लगभग एक जैसे ही हैं। वस्तुतः, ये दोनों कभी-कभी एक दूसरे के बदले प्रयोग किए गए हैं। उदाहरण के लिए, लैव्यव्यवस्था 5:6 कहता है "और वह यहोवा के सामने अपना दोषबलि ले आए, अर्थात् उस पाप के कारण वह एक भेड़ या बकरी पापबलि करने के लिये ले आए; तब याजक उस पाप के विषय उसके लिये प्रायश्चित्त करे";[16] और 7:7 यह कहता है, "जैसे पापबलि है वैसे ही दोषबलि भी है, उन दोनों की एक ही व्यवस्था है।" इससे बढ़कर, इन दोनों बलिदानों से संबंधित व्यवस्था एक जैसे ही है। इन दोनों के बीच एक अंतर यह है कि "दोषबलि," "यहोवा की पवित्र की हुई वस्तुओं के विषय" पाप करने के लिए बलिदान किया जाता था (5:15), जो यह सुझाव प्रस्तुत करता है कि दोषबलि पवित्र स्थान या वहाँ सेवा करने वाले याजकों के विरुद्ध पाप करने से प्रायश्चित्त के लिए बलिदान किया जाता था। (केवल यही अकेला पाप नहीं था जिसके लिए दोषबलि का प्रावधान दिया गया था।) फिर भी, सबसे प्रत्यक्ष अंतर यह है कि इस संक्षिप्त अनुभाग में दोषबलि के लिए कहे गए पाप वे हैं जिसके लिए क्षतिपूर्ती किया जाना आवश्यक था (देखें 5:15, 16; 6:4, 5)। वस्तुतः, कई बार दोषबलि को "क्षतिपूर्ती बलिदान" कहकर भी संबोधित किया गया है।

संभवतः इन दोनों बलिदानों के बीच अंतर वाले प्रश्न का सर्वोत्तम उत्तर यह है कि दोषबलि, पापबलि का ही "उपक्रम" था,[17] जो उस पाप के लिए लागू होता था जिसके लिए क्षतिपूर्ती की जाती है। यदि ऐसा है तो "दोषबलि" को "पापबलि" समझा जा सकता है, जबकि इसका विपरीत सत्य नहीं है।

अनुप्रयोग

किसी व्यक्ति की क्षमता के अनुसार (5:1-13)

दूसरा कुरिंथियों 8:12 में, पौलुस ने दान देने के बारे में लोगों को इस प्रकार उत्साहित किया "जो उसके पास है, न कि उसके अनुसार जो उसके पास नहीं है।" परमेश्वर ने मूसा की व्यवस्था में बलिदान के बारे में जो आज्ञा दी है वह इससे मिलता जुलता है। उसने लोगों को, आर्थिक स्थिति के आधार पर विभिन्न प्रकार के पापबलि लाने की अनुमति दी।

जो सक्षम थे उनको अपने पापबलि के बदले मादा भेड़ या बकरी लाना था। यदि कोई मादा भेड़ या बकरी लाने में सक्षम नहीं था तो वह दो पक्षी ला सकता था। यदि वह दो पक्षी लाने में भी असक्षम था तो वह मैदा भेंट कर सकता था। इन तीनों में से किसी भी परिस्थिति में, यदि ये भेटें उसके निर्देश के अनुसार लाई जाती थी तो परमेश्वर उस भेंट से संतुष्ट हो जाता था। स्पष्टतया, जब कोई अपनी क्षमता के अनुसार करता था तो परमेश्वर इससे प्रसन्न हो जाता था। इससे हम यह अनुमान लगा सकते हैं कि जब एक व्यक्ति की क्षमता भेड़ बलिदान करने की हो, किंतु उसके स्थान पर मैदा भेंट चढ़ाता था तो परमेश्वर उस भेंट को तिरस्कृत कर देता था।

यह तथ्य कि परमेश्वर विभिन्न लोगों से विभिन्न प्रकार के पापबलि से प्रसन्न होता था, तीन सच्चाई का विश्लेषण करता है।

1. *व्यवस्था की अच्छाई।* जो व्यवस्था नागरिकों की विभिन्न क्षमता का ध्यान रखता हो, निश्चय ही एक अच्छा व्यवस्था होगा।

2. *पाप की गम्भीरता।* यद्यपि सबसे दरिद्र व्यक्ति को एक पशु या पक्षी बलिदान करने की बाध्यता नहीं थी, लेकिन उसको भी अपने पाप के लिए कुछ न कुछ - कम से कम मैदा, देना था। पापियों को प्रायश्चित्त करने के लिए कुछ न कुछ तो करना ही होगा; दरिद्रता उन्हें कुछ भी दिए बिना जाने नहीं देती थी। पाप एक गम्भीर विषय है! हरेक पापी को पाप क्षमा प्राप्त करने के लिए कुछ न कुछ करना ही होगा।

3. *परमेश्वर की विभिन्न अपेक्षा।* परमेश्वर का मनुष्य से, उनके क्षमता के आधार पर, अपेक्षा में भिन्नता हो सकती है। जिसे अधिक दिया गया है, उससे अधिक अपेक्षा की जाती है (देखें लूका 12:48)। यहाँ तक कि जिनको थोड़ा दिया गया है उनसे थोड़ा देने की अपेक्षा की जाती है और जो वह प्रभु के लिए कर सकता है उससे वह करने की अपेक्षा की जाती है।

पश्चाताप में क्षतिपूर्ती निहित है (5:14-6:7)

5:14-6:7 में वर्णित दोषबलि के लिए आराधक को क्षतिपूर्ती करनी थी। उसी तरह, जहाँ तक सम्भव हो, आज जो पश्चाताप करता है, उसको भी, अपने पाप के लिए क्षतिपूर्ती करना है। मूसा की व्यवस्था, उनके प्रति क्षतिपूर्ती करने की मांग करती है जिसके विरुद्ध पाप किया गया है और यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने इस प्रकार प्रचार किया, "इसलिए मन फिराव के योग्य फल लाओ" (मत्ती 3:8)। परमेश्वर की क्षमा प्राप्त करने के लिए मसीहियों को कोई कमी नहीं छोड़नी चाहिए। आर. लैयर्ड हैरिस ने इसी विचारधारा को व्यक्त किया:

> किसी भी प्रकार का पाप जिसमें नुकसान सम्मिलित हो, उसमें पूरी क्षतिपूर्ती की जानी चाहिए। जो नुकसान हमने पहुँचाया, क्षमादान उसको भूल जाने की अनुमति प्रदान नहीं करता है बल्कि पश्चाताप व पापांगीकार उस गलत कार्य की भरपाई करने की मांग करता है। पाप क्षमा मुफ्त है इसका तात्पर्य यह नहीं

है कि यह उत्तरदायित्व रहित है।[18]

जब एक मसीही चोरी करता है और उसका आत्मा उसको दोषी ठहराता है तो उस पाप का क्षमा, उसको पश्चाताप करके (प्रेरितों. 8:22), पापांगीकार करके (1 यूहन्ना 1:9), और परमेश्वर से क्षमा याचना करके ही मिल सकता है (प्रेरितों. 8:22)। यद्यपि, जो उसने चोरी की है उसको वह अपने पास नहीं रख सकता है! उसको वह वस्तु लौटाना होगा और उसकी उसको उचित क्षतिपूर्ती करनी होगी।

कभी-कभी पाप की क्षतिपूर्ती करना कठीन होता है। चोरी का उदाहरण जारी रखते हुए हम यह तर्क कर सकते हैं कि यदि चोरी की गई वस्तु उस व्यक्ति के पास न हो, या फिर अब उसका कोई मूल्य न रहा हो तो उसका क्या होगा? यदि जिस व्यक्ति की वस्तु उसने चोरी की हो और अब वह जीवित न रहा हो तो इसका अब क्या होगा? इस संदर्भ में पुराने नियम के सिद्धांत में कुछ निर्देश पाया जाता है। यदि चोरी की वस्तु खो जाती है, तो चोर उस वस्तु के समतुल्य मूल्य चुकाए (इसमें इसका दण्ड भी सम्मिलित होना चाहिए)। जिस व्यक्ति की वस्तु चोरी की गई हो और अब यदि वह जीवित न रहा हो तो इसकी क्षतिपूर्ति उसके वंशजों को की जानी चाहिए। एक मसीही, जिसे पाप करने के लिए दोषी ठहराया गया है, उसको सचमुच पश्चाताप करने की आवश्यकता है।

यीशु मसीह, हमारा दोषबलि (5:14-6:7)

यशायाह 53:10 में, भविष्यवक्ता ने आने वाले मसीह का वर्णन निम्न शब्दों में किया है:

> तौभी यहोवा को यही भाया कि उसे कुचले; उसी ने उसको रोगी कर दिया; जब वह अपना प्राण दोषबलि करे, तब वह अपना वंश देखने पाएगा, वह बहुत दिन जीवित रहेगा; उसके हाथ से यहोवा की इच्छा पूरी हो जाएगी।

यीशु मसीह ने इस अनुच्छेद को पूरा किया (देखें प्रेरितों. 8:26-40)। "दोषबलि" के रूप में, वह हमारे सारे पापों के लिए प्रायश्चित्त करता है - चाहे वह परमेश्वर या मनुष्य के विरुद्ध हो - ताकि जो उचित नहीं था उसको उचित ठहरा सके।

हाँ, मसीह जब हमारे ओर से दोषबलि करता है, तो हमको भी कुछ करना चाहिए - जिस तरह पुरानी वाचा के अंतर्गत इस्राएलियों ने भी किया था। उदाहरण के लिए, हमको भी, जो लोग व्यवस्था के अधीन हैं उनके समान, अपने पापों से पश्चाताप करना है (प्रेरितों. 17:30) और उन पापों का क्षतिपूर्ती करना है। आज, हमको विश्वास और आज्ञाकारिता में यीशु की ओर फिरना है (मरकुस 16:16; प्रेरितों. 2:38)। जब हम ऐसा करेंगे, तो हमारे पाप क्षमा किए जाएंगे - मेढ़े के लहू के कारण नहीं, बल्कि हमारे सिद्ध दोषबलि, यीशु मसीह के लहू के सामर्थ (बलिदान) के द्वारा ऐसा करना है। "क्योंकि जब बकरों और बैलों का लहू और कलोर की राख अपवित्र लोगों पर छिड़का जाना शरीर की शुद्धता के लिए उन्हें पवित्र करता है, तो मसीह का लहू जिसने अपने आप को सनातन आत्मा के

द्वारा परमेश्वर के सामने निर्दोष चढ़ाया, तुम्हारे विवेक को मरे हुए कामों से क्यों न शुद्ध करेगा?" (इब्रा. 9:13, 14)।

दोषबलिः "हे प्रभु, मैंने पाप किया है" (5:14-6:7)

अब हम यहोवा का सिनै पर्वत पर मूसा को दिए गए पाँच बलिदानों के निर्देश में से अंतिम बलिदान पर चर्चा करेंगे। हमने इन बलिदानों में कई समानता के साथ-साथ भिन्नताएं भी देखी। यही बात पाँचवें बलिदान, दोषबलि के लिए भी सत्य है। यद्यपि यह पापबलि की श्रेणी के अंतर्गत ही आता है, लेकिन कुछ विशिष्ट भिन्नताएं भी देखी जा सकती है।

विशिष्ट अभिलक्षण। प्रथम भिन्नता "उल्लंघन (पाप)" की विचारधारा के संदर्भ में है। KJV में दोषबलि को "उल्लंघनबलि (पापबलि)" के रूप में संबोधित किया गया है। "उल्लंघन (पाप)" का तात्पर्य एक निर्धारित सीमा रेखा पार करना है। इस स्थिति में, मूसा की व्यवस्था ने इस्राएलियों के लिए सीमा रेखा निर्धारित की थी जिसके भीतर ही उनको रहना था। व्यवस्था के अधीन, इस बलिदान से संबंधित दो अपराध थे। पहला "यहोवा की पवित्र वस्तुओं" के विरुद्ध आज्ञा का उल्लंघन या पाप। यह अपराध दशवांश का दुरूपयोग, बलि किया गया मांस खाना, जिसे खाने की मनाही थी या दूसरे संदर्भों में उन सभी वस्तुओं का दुरूपयोग करना जो यहोवा की सम्पत्ति मानी जाती थी। दूसरा पड़ोसी से संबंध बिगाड़ना है, जैसे दूसरे की सम्पत्ति हड़पना या दुरूपयोग करना या पड़ोसी की सम्पत्ति को नुकसान पहुँचाना। दोनों ही परिस्थिति में बलिदान करना आवश्यक था। NASB "दोषबलि" शब्दावली प्रयोग करता है जो अधिक उचित जान पड़ता है - यद्यपि व्यवस्था की सीमा रेखा लांघना पाप है।

यदि अज्ञानतावश पाप हुआ हो, तो इससे बचने के लिए पाप करने वाले के पास कोई बहाना नहीं था क्योंकि व्यवस्था पहले ही दी जा चुकी थीः

> "यदि कोई ऐसा पाप करे कि उन कामों में से जिन्हें यहोवा ने मना किया है किसी काम को करे, तो चाहे वह उससे अनजाने में हुआ हो तौभी वह दोषी ठहरेगा, और उसको अपने अधर्म का भार उठाना पड़ेगा। इसलिये वह एक निर्दोष मेढ़ा दोषबलि करके याजक के पास ले आए, वह उतने ही दाम का हो जितना याजक ठहराए, और याजक उसके लिये उसकी उस भूल का जो उसने अनजाने में की हो प्रायश्चित्त करे, और उसका पाप क्षमा किया जाएगा। यह दोषबलि ठहरे; क्योंकि वह मनुष्य निःसन्देह यहोवा के सम्मुख दोषी ठहरेगा" (5:17-19)।

यह महत्वपूर्ण तथ्य इस बात पर ज़ोर देता हैः मनुष्यों के दोष को परमेश्वर ही निर्धारित करता है, और मनुष्य स्वयं इसका निर्धारण नहीं कर सकता है!

दोष उपलक्षित नहीं था बल्कि यह वास्तविक दोष था। बलिदान चढ़ाने के द्वारा इसको मान लिया जाना चाहिए था। यद्यपि परमेश्वर की "पवित्र वस्तुओं" के विरुद्ध किए गए पाप और पड़ोसी के साथ किए गए अपराध के बलिदान में भिन्नता है, परमेश्वर अपने आप ही व्यवस्था के द्वारा इस बात का निर्धारण करता

है कि इस दोष के साथ कैसे व्यवहार किया जाए।

आज सुसमाचार प्रचार में सबसे बड़ी चुनौती यह है कि लोगों को सर्वशक्तिमान परमेश्वर के प्रति पाप करने से कैसे निरूत्तर किया जाए। बाइबल परमेश्वर की पुस्तक है जो यह निर्धारित करता है कि कहाँ उन्होंने उसके विरुद्ध पाप किया है। संसारिक मनोवैज्ञानिक युग में, मनुष्य वास्तविक दोष का निवारण करने में मोहित हो चला है। कई लोग यह कहते हैं कि दोष या पाप के लिए माता-पिता, समाज, या दूसरे पापी दोषी हैं, लेकिन वे यह कहने से बचते हैं कि हरेक व्यक्ति विशेष स्वयं विचार या कार्यों के ज़िम्मेदार हैं। यह विचारधारा परमेश्वर के वचन के विपरीत ठहरता है। पौलुस ने ऐसा घोषित कियाः

> क्योंकि हम यहूदियों और यूनानियों दोनों पर यह दोष लगा चुके हैं कि वे सब के सब पाप के वश में हैं। जैसा लिखा है: "कोई धर्मी नहीं, एक भी नहीं। कोई समझदार नहीं; कोई परमेश्वर का खोजनेवाला नहीं। सब भटक गए हैं, सब के सब निकम्मे बन गए हैं; कोई भलाई करने वाला नहीं, एक भी नहीं ...।" इसलिये कि सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं (रोमियों 3:9-12, 23)।

परमेश्वर ने कहा कि मनुष्य वास्तव में दोषी है और हमें इसकी वास्तविकता का सामना करना है।

ईश्वरीय संताप की अवधारणा, मनुष्य के दोष को घोषित करने की चुनौती से जुड़ी है। आज एक और घातक आत्मिक त्रुटि यह है कि सुसमाचार प्रचार के दौरान कुछ भी नकारात्मक बात नहीं बोली जानी चाहिए। यदि वास्तविक पाप के बारे में नहीं बोला जाए तो लोग कैसे सुसमाचार का प्रत्युत्तर देंगे? जब पाप का दोषी ठहराया जाता है तो बाइबल कहती है कि यह "ईश्वरीय संताप" उत्पन्न करती है (2 कुरिं. 7:11)। पेंतेकुस्त के दिन पतरस के संदेश में, वह यीशु मसीह का मृतकों में से जी उठने के सुसमाचार का प्रचार कर रहा था। लेकिन इसके साथ ही, कि श्रोता उसके संदेश का प्रत्युत्तर दें पतरस उनको उनकी कुछ नकारात्मक बातों का स्मरण दिला रहा था कि सबसे पहले यीशु को क्रूस पर दिए जाने के लिए वे व्यक्तिगत् रूप से ज़िम्मेदार थे। ज्यों ही वह बोल रहा था, वहाँ उपस्थित लोगों में से बहुतों ने पश्चातापी हृदय से पूछा, "भाईयों, उद्धार पाने के लिए हम क्या करें?" (प्रेरितों. 2:37)। तब पतरस ने उनको यह सुसमाचार बताया कि वे कैसे इस पाप के वास्तविक बोझ से बच सकते हैं। यीशु मसीह की मृत्यु, उसके गाड़े जाने, और उसके पुनुरूत्थान में उनका बपतिस्मा, उनको उनके सब पापों से शुद्ध करेगा और तब परमेश्वर उस घड़ी प्रतिज्ञा की गई पवित्र आत्मा का दान उनको देगा (प्रेरितों. 2:38)। यीशु मसीह के सुसमाचार सुनाने की एक दुःखद बात यह है कि उसको आने की आवश्यकता क्यों पड़ी और मनुष्यों को उसकी आवश्यकता क्यों है। पाप जगत में आया, और पाप के द्वारा जगत में मृत्यु आई (रोमियों 5:12)। पाप, दोष उत्पन्न करता है, और दोष का निदान यीशु मसीह के द्वारा किया जाना चाहिए।

इन बलिदानों में दूसरा अंतर यह है कि परमेश्वर न केवल दोषी को उत्तरदायी

ठहराता है बल्कि वह उस दोष को दूर करने का आवश्यक उपाय भी बताता है। यह तथ्य कि परमेश्वर ने उस पाप को दूर करने के आवश्यक सिद्धांत निर्धारित कर उसके कुछ बड़े उद्देश्यों को भी उल्लेखित किया। उन उद्देश्यों में से एक जो लहू के बलिदान की आवश्यकता के बारे में पाया जाता है वह आराधक के पाप के प्रवृति के प्रति उसका विवेक है। यह न केवल परमेश्वर की "पवित्र ... वस्तुओं" (5:15), उसके लिखित व्यवस्था के प्रति पाप था बल्कि यह उस परमेश्वर के प्रति जो सर्वशक्तिमान, राजा, और सृष्टिकर्ता है, उसके प्रति पाप था। आराधक को अपने पाप के प्रति आंखें नहीं मूँदना चाहिए। स्वभाव ही से वे परमेश्वर के स्वभाव से दूर थे। जो बलिदान इस पाप क्षमा के लिए आवश्यक था वह आराधक के क़र्ज़ के बारे में भी बोलता है जिसे उसको भरना था - इस परिस्थिति में "एक दोषरहित मेम्ना" की आवश्यकता थी (6:6)। न केवल इब्रानियों के बीच बल्कि कालांतर में अरबी एवं रोमी लोगों ने मेढ़ा को अपना क़र्ज़, विशेषकर शुल्क चुकाने के साधन के रूप में प्रयोग किया था।[19] दूसरा राजा 3:4 में, मोआब के राजा को इस्राएल के राजा को "100,000 भेड़ें और 100,000 मेढ़ों के ऊन देने थे।" यह शुल्क था। कालांतर में यशायाह भविष्यवक्ता ने यहोवा की ओर से मोआब को यह निर्देश जारी किया: "... सेला नगर से सिय्योन की बेटी के पर्वत पर देश के हाकिम के लिये भेड़ों के बच्चों को भेजो" (यशा. 16:1)। जब मेढ़ा खरीदकर याजक के पास लाया जाता था, तो पापी को अपना पाप अंगीकार करना था और तब याजक मेम्ने को पापबलि के रूप में बलिदान करते थे। यद्यपि, लहू, वेदी के सिंगों पर नहीं लगाया जाता था और न ही पवित्र स्थान के निकट लाया जाता था बल्कि होमबलि के समान ही लहू को वेदी पर छिड़का जाता था।

यह बलिदान न केवल परमेश्वर के विरुद्ध पाप, बल्कि पड़ोसी के विरुद्ध अपराध के लिए भी चढ़ाया जाना चाहिए था। जो भी गलत तरीके से ठगा गया है या गलत तरीके से प्रयोग किया है, उसके लिए क्षतिपूर्ति के रूप में वास्तविक नुकसान का पाँचवाँ भाग भरा जाना चाहिए था। यह न केवल पड़ोसी के साथ संबंध सुधारने के लिए अनिवार्य था बल्कि दोषी को उसके अपराध से भी अवगत् कराना था। इसके लिए यहोवा को जो बलिदान चढ़ाया जाना था वह एक मेढ़ा था और याजक इसका मूल्य निर्धारित करते थे। इसका मानक मिलापवाले तम्बू का शेकेल होता था और याजक ही पड़ोसी के नुकसान को निर्धारित करते थे और क्षतिपूर्ति के साथ ही इसमें वास्तविक क्षति का पाँचवाँ भाग भी क्षतिपूर्ती के रूप में जोड़ा जाता था। फिर हम यह भी देखते हैं कि दोषी को अपने दण्ड और क्षतिपूर्ती निर्धारित करने की अनुमति नहीं थी, बल्कि परमेश्वर अपने याजकों के माध्यम से वह निर्धारित करता था कि उसको प्रसन्न करने और पड़ोसी की क्षतिपूर्ती करने लिए कितना दण्ड दिया जाना चाहिए था।[20]

दोषबलि और पापबलि के बीच तीसरा अंतर भी देखा जा सकता है। पापबलि, राष्ट्र के पाप के लिए अधिक लागू होता था। जबकि दोषबलि मुख्यतः व्यक्ति विशेष के पाप के लिए लागू होता था। पापांगीकार और बलिदान व्यक्तिगत् रूप से किया किया जाना चाहिए था और यह प्रायश्चित्त के दिन याजक के द्वारा नहीं किया

जाना चाहिए था। वस्तुतः, यह आराधक को उसके पाप के बारे में सचेतन चेतावनी देता था। पापबलि में कई पाप सम्मिलित थे जो किसी के ध्यान में तब लाया जाता था जब वे असावधानी और अज्ञानता से करते थे। जबकि उनमें से कुछ पर रोशनी दोषबलि में डाला गई है, इनमें बलिदान का एक बड़ा भाग जान बूझकर किए गए पाप पर ज़ोर डालता है। इसलिए, क्षतिपूर्ती भी बड़ी होती थी।

मसीह और दोषबलि। स्पष्टतया इस बलिदान और मसीह का सभी मानवजाति के लिए पापबलि बनने में कुछ स्पष्ट समानताएं पाई जाती है। फिर भी, मसीह का पापबलि बनने और उसी समय उसका दोषबलि बनने में कुछ जटिल भिन्नताएं भी हैं। यशायाह 53:10 में, भविष्यवक्ता ने मसीह के बारे में यह वक्तव्य दियाः "तौभी यहोवा को यही भाया कि उसे कुचले; उसी ने उसको रोगी कर दिया; जब वह अपना प्राण *दोषबलि* करे, तब वह अपना वंश देखने पाएगा, वह बहुत दिन जीवित रहेगा; उसके हाथ से यहोवा की इच्छा पूरी हो जाएगी।" (बल दिया गया है)। भविष्यवक्ता ने "हमारे अपराधों" के बारे में बोला (यशा. 53:5) और कहा कि मसीह ने "... बहुतों के पाप का बोझ उठा लिया, और अपराधियों के लिये विनती करता है" (यशा. 53:12)।

अपने पूरे सेवकाई के दौरान पौलुस ने प्रभु के विरुद्ध अपने कई अपराधों की गिनती की, फिर भी उसने परमेश्वर को बार-बार उसकी दया और अनुग्रह के लिए, जो उसने मसीह यीशु में प्राप्त किया था, धन्यवाद दिया (देखें 1 तीमु. 1:12-16)। मसीह के बलिदान ने पौलुस को मसीह का ऋणि बनाया, वह उद्धार का सुसमाचार सुनाने के लिए "बाध्य" हो गया (रोमियों 1:14-17)। पौलुस "उद्धार के लिए कार्य" नहीं कर रहा था बल्कि उसके लिए मसीह ने जो महान बलिदान किया था, उसे पाप का क़र्ज़ समझने के लिए विवश किया, जो अब उसके जीवन से हटा दिया गया था (देखें रोमियों 7)।

पाप से हमारा उद्धार में भी इसी तरह की कृतज्ञता की भावना प्रतिबिंब होनी चाहिए। यह प्रभु को हमारी कृतज्ञता ऋण चुकाने के संदर्भ में नहीं बल्कि यह उस प्रकार होना चाहिए जिस प्रकार एक गाने की कड़ी कहती है, "उसने वह ऋण चुकाया, जो उसका नहीं था। मैं ऋणी था जिसे मैं चुका नहीं सकता था।"[21]

इस प्रकार के बलिदान में दूसरा सबसे महत्वपूर्ण सिद्धांत यह है कि प्रभु सर्वदा बपतिस्मा पूर्व व पश्चात् पापांगीकार की मांग करता है। "पापांगीकार" (ὁμολογέω, *होमोलोगियो*) शब्द का अर्थ "सहमत होना" है। इस प्रकार का भाव, पुराने व नये नियम दोनों में पाया जाता है। लैव्यव्यवस्था की पुस्तक की दोषबलि में, आराधक को बलिदान करने से पहले पापांगीकार करना पड़ता था। वस्तुतः, उसको इस बात से सहमत होना पड़ता था कि परमेश्वर पहले ही सब कुछ जानता हैः उसके व्यवस्था का उल्लंघन हुआ है, पाप हो गया है, और मनुष्य के जीवन में पाप समा गया है। उन पापों को खुलकर स्वीकार करने के बाद आराधक को पापों की क्षमा का मौका मिल जाता था। नये नियम में, बपतिस्मा लेने से पहले, पश्चाताप और यीशु को परमेश्वर का पुत्र ग्रहण करने की अनिवार्यता परमेश्वर की ओर से ठहराया गया है ताकि शुद्धिकरण की प्रक्रिया पूरी की जा सके। हमें

परमेश्वर के साथ सहमत होना पड़ेगा कि हम पापी हैं और हमें उसके पुत्र यीशु मसीह के द्वारा पापों की क्षमा की आवश्यकता है। जब एक बार ऐसा हो जाता है, तब उसमें बपतिस्मा हमें उसके उद्धार दिलाने वाले लहू के पास हमारी पहुँच होती है। मसीही बनने के पश्चात्, हमें अपने पापों को परमेश्वर के सम्मुख क्षमा के लिए प्रार्थना में स्वीकार करने का निर्देश दिया गया है। यूहन्ना ने इसका वर्णन अपनी पत्री में इस प्रकार किया है:

> यदि हम कहें कि हम में कुछ भी पाप नहीं, तो अपने आप को धोखा देते हैं, और हम में सत्य नहीं। यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वासयोग्य और धर्मी है। यदि हम कहें कि हम ने पाप नहीं किया, तो उसे झूठा ठहराते हैं, और उसका वचन हम में नहीं है (1 यूहन्ना 1:8-10)।

दुष्ट हमारे मस्तिष्क में प्रतिदिनि कई गलत बातें डालकर हमारे पीछे हाथ धोकर पड़ा रहता है। पापांगीकार हमें परमेश्वर के निकट रखता है और उसकी (परमेश्वर) दृष्टि में दोष और पाप के प्रति हमको सचेत रखता है। यदि हम इस दृष्टिकोण से चूक जाते हैं तो हम अपनी आत्मिक संवेदनशीलता और अनुभूति का एक बड़ा भाग खो देते हैं।

उपसंहार। लैव्यव्यवस्था की पुस्तक में दोषबलि (एवं अन्य बलिदान) का विश्लेषण हमको परमेश्वर के प्रेम के बारे में और उसके पुत्र के बलिदान के बारे में एक गूढ़ कृतज्ञता प्रदान करता है। क्रूस पर हमारे पापों का दण्ड उठाकर, यीशु हमारा दोषबलि बन गया। उसने हमारा क़र्ज़ चुका दिया और अब हम उसकी सेवा करने के बाध्य हो गए हैं।

मैक्स टार्बेट

समाप्ति नोट्स

[1]"भेड़ या बकरी देने की सामर्थ न हो" का शाब्दिक अनुवाद "उसकी कमाई भेड़ खरीदने का सामर्थ नहीं प्रदान करता है।" [2]एक के बजाय दो पक्षियों की आवश्यकता क्यों थी इसके बारे में कोई व्याख्या नहीं किया गया है। आर. के. हैरीसन के अनुसार, "कुछ टीकाकार यह [सुझाव] देते हैं कि चूँकि पक्षियों से चरबी अलग नहीं की जा सकती थी तो इसलिए याजक को पक्षी की पापबलि के मांस से वंचित रखने के बजाय (देखें लैव्य. 6:26), एक पक्षी को पापबलि की अर्हता पूरी करने हेतु समूचा जलाया जाता था और दूसरे पक्षी को याजक के प्रयोग के लिए दिया जाता था।" फिर भी, हैरीसन ने इस व्याख्या का त्याग यह कहकर किया, कि दोनों पक्षियों को वेदी पर जलाया जाना चाहिए था। (आर. के. हैरीसन, *लैव्यव्यवस्था*, द टिंडेल ओल्ड टेस्टामेंट कमेंट्रीज [डॉनर्स ग्रूव, इलनॉसः इंटर-वर्सिटी प्रेस, 1980], 70.) [3]इस प्रकार के व्यक्ति को जिसे दो पक्षी बलिदान करना है, इस अनुच्छेद में "अपर्याप्त संसाधन" (शाब्दिक अनुवाद जिसके "हाथ कुछ भी नहीं है") वाला कहा गया है। [4]हैरीसन, 70. [5]इसका आंकलन इस बात से लगाया जाता है कि अय्यूब की पुस्तक मूसा की व्यवस्था से पहले लिखी गई होगी। [6]लुडविग कोहलर और वाल्टर बौमगार्टनर, *दी हिब्रू एंड आर्माइक लेक्सिकन ऑफ़ दी ओल्ड टेस्टामेंट*, स्टडी एडिशन, अनुवाद और सम्पादन एम. ई. जे. रिचर्डसन (बोस्टन: ब्रिल, 2001), 1:96. [7]फ्रांसिस ब्राऊन, एस. आर. ड्राइवर, और चार्ल्स ए. ब्रिग्गस, *ए हिब्रू*

एण्ड ग्रीक लेक्सीकन आफ दि ओल्ड टेस्टामेंट (आक्सफॉर्ड: क्लैरेन्डन प्रेस, 1977), 79. [8]गॉर्डन जे. वेनहैम, *द बुक आफ लैव्यव्यवस्था*, द न्यू इंटरनेशनल कमेंट्री आन दि ओल्ड टेस्टामेंट (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 1979), 106. [9]रिचर्ड ई. एवरबैक, "सैकरीफाइसेस एण्ड आफरिंग्स," *डिक्सनरी आफ द ओल्ड टेस्टामेंट: पेंटाट्यूल*, सम्पादक टी. डेसमंड एलेक्जेण्डर एण्ड डेविड डब्ल्यु. बार्कर (डॉनर्स ग्रूव, इलनॉस: इण्टरवर्सिटी प्रेस, 2003), 721. [10]जेकब मिलग्रोम, "द बुक आफ लैव्यव्यवस्था," *इंटरप्रेटर्स वन-वोल्यूम कमेंट्री आन द बाइबल*, संपादक चार्ल्स एम. लेमोन (नैशविल: अर्बिंगदन प्रेस, 1971), 71.

[11]रॉय गेन, *लैव्यव्यवस्था, गिनती,* दि NIV अप्लीकेशन कमेंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जॉडरवैन, 2004), 133, 34. एवरबैक ने इस विश्लेषण के बारे में चर्चा किया है लेकिन उनके अनुसार 5:17-19 में वर्णित "अनजाने में किया गया पाप" के जैसा नहीं है (एवरबैक, 721)। [12]जेकब मिलग्रोम, *लैव्यव्यवस्था 1-16*, दि एंकर बाइबल (न्यू यॉर्क: डबलडे, 1991), 50. [13]आर. के. हैरीसन, *इंट्रोडक्शन टू दि ओल्ड टेस्टामेंट* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 1969), 600. [14]जॉन एच. वाल्टन, *क्रोनोलॉजिकल एण्ड बैकग्राऊंड चार्ट्स आफ दि ओल्ड टेस्टामेंट*, संशोधित एवं विस्तृत (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जॉडरवैन पब्लिशिंग हाऊस, 1994), 22. [15]बिल टी. आर्नाल्ड और ब्रायन टी. बेयर, *एनकाउन्टरिंग दि ओल्ड टेस्टामेंट* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक्स, 1999), 120. [16]लैव्यव्यवस्था 5:7 भी "दोषबलि" के बारे में पिछली आयत में "पापबलि" के बारे में विश्लेषण करने के बाद उसी बलिदान के बारे में बताता है। [17]आर्नाल्ड और बेयर, 120. [18]आर. लैर्ड हैरिस, "लैव्यव्यवस्था," *दि एक्सपोजीटर्स बाइबल कमेंट्री*, खण्ड 2, उत्पत्ति - गिनती, सम्पादक फ्रैंक ई. गैबलीन (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जॉडरवैन पब्लिशिंग हाऊस, 1990), 552-53. [19]एस. एच. केलोग, *द बुक आफ लैव्यव्यवस्था*, तीसरा संस्करण (एन.पी.: ए. सी. आर्मस्ट्रांग अण्ड सन, 1899; पुनर्मुद्रित, मिनियापोलीस: क्लॉक एण्ड क्लॉक पब्लिशर्स, 1978), 161. [20]पूर्वोक्त, 168.

[21]"He Paid a Debt," *सांग्स आफ फैथ एण्ड प्रेज*, संकलनकर्ता और संपादक एल्टन एच. हॉवर्ड (वेस्ट मोनरो, लुजियाना: हॉवर्ड पब्लिशिंग कम्पनी, 1994)।